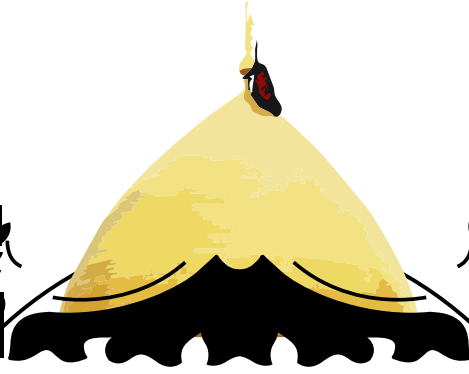




मुहूर्म में निकाह

पेशकश :
अब्दे मुस्ताफ़ा ऑफिशियल



मुहूर्त में विकाह

पेशकश :
अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

मुहर्रम में निकाह

टाइटल : मुहर्रम में निकाह

पेशकश : अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ज़ुबान : हिंदी

टॉपिक : इस्लाह

कंपोज़िंग : अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

तर्जुमा : अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल ट्रांसलेशन डिपार्टमेंट

प्रूफ़ रीडिंग : मुहम्मद रियाज़ क़ादरी

प्रकाशित : साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन

सन : सितंबर 2021, (मुहर्रम 1443 हिजरी)

सफ़ाहात : 19

All Right Reserved.

साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन
संचालित अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

Contents

किसी महीने में निकाह मना नहीं।	4
9 या 10 मुहर्रम को भी निकाह कर सकते हैं।	4
ये ग़लत मशहूर है।	5
इसे बद शुगुनी समझना जहालत है।	5
पहले अशरे में निकाह	7
तेरह तीज़ी में निकाह	7
कुछ और ग़लत फ़हमियाँ	9
मुहर्रम में मछली खाना	9
मुहर्रम में पान खाना	11
मुहर्रम में साग और अंडे खाना	11
एक मिसाल नये साल की	12
आखिरी बातें	13
हिंदी ज़ुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :	15

بسم الله الرحمن الرحيم

माहे मुहर्रम में निकाह कर सकते हैं या नहीं? ये बज़ाहिर एक छोटा सा मसअला नज़र आता है जिस का जवाब बिल्कुल मुख़्तसर सा है लेकिन अब ये एक ऐसी शक्ल इख़्तियार कर चुका है कि जिस को लेकर फ़ितना खड़ा किया जा रहा है। दो लफ़्ज़ों को जहाँ काफी होना चाहिये था वहाँ अब बहसें होनी शुरू हो गई हैं। ग़ैरों की बात तो अपनी जगह है, हमारे अपने भी इस में उलझन के शिकार हो रहे हैं। अहले सुन्नत से ताल्लुक रखने वाले, ये तस्लीम करते हुये कि मुहर्रम में निकाह शरअन जाइज़ व दुरुस्त है फिर आगे बढ़ कर शियों की बोली बोल रहे हैं कि "निकाह कर तो सकते हैं लेकिन, चूँकि, लिहाज़ा, अगर, मगर... वग़ैरह"।

हमने अहले सुन्नत का मोकि़फ़ वाज़ेह करने के लिये ये रिसाला तरतीब दिया है जिस में आप मुअतबर उलमा -ए- अहले सुन्नत के इस मसअले पर किए गये कलाम को मुलाहिज़ा फरमायेंगे।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

किसी महीने में निकाह मना नहीं।

ये जान लें कि किसी भी महीने में निकाह करना मना नहीं है। अब चाहे मुहर्रम हो या रमज़ान, किसी भी महीने में निकाह किया जा सकता है। चुनाँचे इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान रहमतुल्लाह त'आला अलैह से सवाल किया गया कि माहे मुहर्रमुल हराम और सफ़रुल मुजप्फर के महीने में निकाह करना मना है या नहीं ? और अगर है तो क्यों?

आप रहमतुल्लाह त'आला अलैह जवाब में लिखते हैं कि :
निकाह किसी महीने में मना नहीं।

(فتاوى رضويه، ج 11، ص 266)

9 या 10 मुहर्रम को भी निकाह कर सकते हैं।

मुहर्रम के महीने में किसी भी तारीख को निकाह किया जा सकता है। अब चाहे वो 9 तारीख हो या 10। निकाह शर'अन जाइज़ व दुरुस्त है। चुनाँचे इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत रहमतुल्लाह

मुहर्रम में निकाह

त'आला अलैह से सवाल किया गया कि क्या माहे मुहर्रमुल हराम में और बिल खुसूस 9 तारीख की शब में निकाह करना जाइज है या नहीं?

आप इरशाद फरमाते हैं कि जाइज है।

(فتاویٰ رضویہ، ج 23، ص 194)

ये ग़लत मशहूर है।

ये बात ग़लत मशहूर है कि सफ़र और मुहर्रम के महीने में निकाह नहीं किया जा सकता। निकाह किसी भी महीने में जाइज है। चुनाँचे मलफूज़ाते आला हज़रत में है :

अर्ज : क्या मुहर्रम और सफ़र में निकाह करना मना है?

इरशाद : निकाह किसी महीने में मना नहीं, ये ग़लत मशहूर हैं।

(ملفوظات اعلیٰ حضرت، حصہ 1، ص 95)

इसे बद शुगुनी समझना जहालत है।

मुहर्रम में निकाह को बद शुगुनी समझा जाता है जो कि बिल्कुल दुरुस्त नहीं है। तहक्कीकी फतावा तलबा -ए- जामिया

मुहर्रम में निकाह

समदिया में एक सवाल इसी ताल्लुक से किया गया कि बाज मुसरत की तकरीबत को बद शुगुनी समझते हैं, शरीअते मुतहहरा का इस सिलसिले में क्या हुक्म है?

जवाब : माहे मुहर्रमुल हराम में शादी बियाह और दीगर मुसरत की तकरीबात को बद शूगुनी समझना महज जिहालत और नादानी है, शरीअत में इस की कोई अस्ल नहीं, शादी बियाह हर महीने में जाइज है।

फ़तावा रज़विया में है :

"निकाह किसी महीने में मना नहीं।"

(فتاویٰ رضویہ، ج 5 ص 179)

मुहम्मद तौकीर रज़ा चिश्ती

(الطالب فی صف الاختصاص فی الفقه)

(تحقیقی فتاویٰ طلباء جامعہ صمدیہ، ص 125)

पहले अशरे में निकाह

जैसा कि हम बयान कर चुके कि मुहर्रम के महीने में किसी भी तारीख को निकाह करने में कोई हर्ज नहीं तो पहले, दूसरे या तीसरे किसी भी अशरे (दस दिनों) में निकाह करना जाइज़ है, इस में कोई हर्ज नहीं। चुनाँचे फ़तावा खलीलिया में एक सवाल कुछ यूँ मौजूद है कि क्या मुहर्रम के अशरा -ए- अव्वल में अज़ रू -ए- शरअ़ निकाह करना जाइज़ है या नहीं?

अल जवाब : मुहर्रमुल हराम के अशरा -ए- अव्वल में शादी करना जाइज़ व मुबाह है जैसे और अय्याम में।

(فتاوى خلیلیه، ج 3، ص 135)

तेरह तीजी में निकाह

कहा जाता है कि सफ़र के महीने में शुरू के तेरह दिन बहुत भारी और तेज़ होते हैं जिन्हें "तेरह तीजी" कहा जाता है, ये भी बे अस्ल बात है, शरीअत में ऐसी कोई बात नहीं आई कि शुरू के या आखिरी

मुहर्रम में निकाह

के दिन भारी होते हैं या इन में निकाह करना मना है, ये सब बातें ग़लत मशहूर हो गई हैं।

चुनाँचे फ़कीहे मिल्लत , अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहीमहुल्लाह त'आला से सवाल किया गया कि माहे सफ़र में 13 तारीख तक और माहे रबीउल अव्वल में 12 तारीख तक आवाम शादी बियाह करने से मना करते हैं तो शरीअत का इस बारे में क्या हुक्म है?

अल जवाब : यकुम सफ़र से 13 तारीख तक और यकुम रबीउल अव्वल से 13 तक शादी बियाह करना बिला शुबा जाइज़ है, शर'अन कोई हर्ज नहीं। इन तारीखों में शादी बियाह करने को मना करना जिहालत वा नादानी है।

(فتاوى فيض الرسول، ج1، ص517)

आप ही से एक और सवाल किया गया कि माहे मुहर्रम में शादी बियाह जायज़ है या नहीं?

अल जवाब : जाइज़ है, शर'अन कोई मुमानिअत नहीं।

(ایضا)

कुछ और ग़लत फ़हमियाँ

मुहर्रम में मछली खाना

कुछ लोग ये भी कहते हैं कि माह मुहर्रम में मछली नहीं खानी चाहिये क्योंकि ये ग़म का महीना है। इसी वजह से निकाह के लिये भी मना किया जाता है। ये जान लीजिये कि शरीअत ने ना तो इसे ग़म का महीना क़रार दिया है और ना ही इस तरह ग़म मनाने का हुक्म दिया है फिर अपनी तरफ़ से इस तरह की बातें लाकर जाइज़ कामों से रोकना कैसे सही हो सकता है?

फ़तावा बरेली शरीफ़ में एक सवाल इसी ताल्लुक से मौजूद है कि क्या अय्यामे मुहर्रम में मछली खाना मना है?

अल जवाब : मछली खाना किसी दिन मना नहीं, बाज़ जुहला ये कहते हैं कि अय्यामे मुहर्रम में मछली खाना ना चाहिये, ये बिल्कुल बे अस्ल है।

(फ़ताویٰ بریلی شریف، ص 302)

मुहर्रम में निकाह

ये भी कहा जाता है कि मुहर्रम या सफ़र के महीने में नया घर नहीं बनाना चाहिये। ये भी इसी किस्म की बात है जैसे कुछ बातें बयान हुईं। इन सब चीज़ों का मक़सद ग़म मनाना है जो कि बिल्कुल दुरुस्त नहीं।

फ़तावा फ़कीहे मिल्लत में एक सवाल यूँ है कि ज़ैद माहे मुहर्रम या सफ़र में नया घर बनवाना चाहता है। शरीअते मुहम्मदी में इन दोनों महीनों में घर बनाना कैसा? नीज़ इन के अलावा किसी महीने में घर बनाने से कोई शरई रोक है या नहीं?

अल जवाब : माहे मुहर्रमुल हराम, सफ़र या किसी और महीने में नया घर बनाने में शर'अन कोई मुमानिअत (रोक) नहीं क्योंकि किसी महीने या किसी तारीख को मनहूस जानना नज़ूमियों के ढकोसले हैं। हदीस शरीफ़ में है "لا صفر" यानी सफ़र कोई शय नहीं। इसी के तहत अश'अतुल लम'आत जिल्द सोम, सफ़हा 260 पर है :

مراد ماه مشهورست، عام آنرا محل نزول بلايا و حوادث و آفات
دارند، این اعتقاد نیز باطلست و اصله ندارد۔ اه تلخیصا

और हज़रते सदरुशशरिया फ़रमाते हैं कि माहे सफ़र को लोग मनहूस जानते हैं, इस में शादी बियाह नहीं करते, लड़कियों को

मुहर्रम में निकाह

रुखसत नहीं करते और सफ़र करने से गुरेज़ करते हैं, खुसूसन माहे सफ़र की तेरह तारीखें बहुत मनहूस मानी जाती हैं, ये सब जिहालत की बातें हैं। हदीस में फ़रमाया कि सफ़र कोई शय नहीं यानी लोगों का इसे मनहूस समझना ग़लत है।

(بہار شریعت، حصہ 16، ص 258)

(فتاویٰ فقیہ ملت، ج 2، ص 289)

मुहर्रम में पान खाना

अय्यामे मुहर्रम में पान खाने से भी मना किया जाता है जो कि बिल्कुल दुरुस्त नहीं है। पान हो या कोई दूसरी खाने की चीज़, अगर वो हलाल है तो उसे मुहर्रम या किसी और महीने में खाना जाइज़ है।

(دیکھیے: فتاویٰ رضویہ، ج 24، ص 596)

मुहर्रम में साग और अंडे खाना

बाज़ लोग कहते हुये नज़र आते हैं कि इस महीने में साग और अंडा भी नहीं खाना चाहिये ये बात भी दुरुस्त नहीं है। जो चीज़ें खाना

मुहर्रम में निकाह

जाइज है, उन्हें मुहर्रम के महीने में भी खा सकते हैं। इस तरह की बातें अहले सुन्नत में ग़ैरों की तरफ़ से या उनकी वजह से आई हैं। अहले सुन्नत में ऐसी बातों की कोई अस्ल नहीं है। ये सब सोग और ग़म को बढ़ावा देने वाली बातें हैं।

एक मिसाल नये साल की

चूँकि इस महीने से इस्लामी साल का आगाज़ होता है तो लोग एक दूसरे को मुबारकबाद पेश करते हैं लेकिन फिर यहाँ भी ये कहा जाता है कि मुबारकबाद ना दी जाये क्योंकि ये ग़म का महीना है। यही वो बुनियादी ग़लत फहमी मालूम होती है कि जिसकी वजह से लोगों ने ऐसे बे सरो पा के मसाइल घढ़ लिये हैं। ये ग़म मनाने का ही ख़्याल है कि जो आगे चल कर इस हद तक पहुँच गया कि लोगों को जाइज कामों से मना किया जा रहा है।

मुबारकबाद देने के ताल्लुक से इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि ईद और नये साल और नये महीने की मुबारकबाद देने में कोई हर्ज नहीं।

(انظر: فتاویٰ حدیثیہ، اردو، ص 381)

आखिरी बातें

हमने मुहर्रमुल हराम में निकाह के ताल्लुक से उलमा -ए-अहले सुन्नत के मोकिफ़ उनकी किताबों, फ़तावों और अक़वाल से बयान किया है।

निकाह के मसअले के साथ साथ कुछ और मसाइल भी ज़ेरे बहस आये हैं जो अलग तो हैं लेकिन वजह सब की एक ही मालूम होती है और वो है इस महीने को ग़म का महीना समझना जो कि बिल्कुल दुरुस्त नहीं है। ऐसे अगर किसी सहाबी की शहादत के महीने को ग़म का महीना क़रार दिया जाने लगे तो फिर कौन सा महीना बचेगा?

आगे बढ़ कर हम ये सवालात भी कर सकते हैं कि जब मुहर्रम में निकाह नहीं कर सकते तो फिर कौन सा महीना ऐसा है कि जिस में निकाह करना चाहिये? क्या उस महीने में किसी की शहादत वाकेअ नहीं हुई? क्या उस महीने में ऐसी कोई तारीख नहीं कि जिस की तारीख जुल्मो सितम की दास्तानें याद दिलाती हो? अगर हैं, और बेशक हैं तो फिर क्या उन के शुहदा से अक़ीदत नहीं? फिर क्यों तमाम

मुहर्रम में निकाह

शुहदा का ज़िक्र ना करके खास इस महीने में ऐसे मसाइल बयान किये जाते हैं? क्या ये शरीअत के मुकाबिले में अपनी मन मानी नहीं है?

जब ये महीना आता है तो शुहदा -ए- करबला की यादें ताज़ा हो जाती हैं, ये यादें इस लिये नहीं कि हम उन्हें ले कर रोना धोना शुरू कर दें और ज़बरदस्ती ग़म का माहौल बनाने के लिये इस तरह के मसाइल घढ़ लें जिन की शरीअत में कोई अस्ल नहीं बल्कि ये यादें इसीलिये हैं कि हम उन का ज़िक्र करें, उन के मिशन पर काम करें, उन्होंने जिस दीन की खातिर कुर्बानियाँ दी हैं, उस दीन की सर बुलंदी के लिये कोशिश करें।

अल्लाह त'आला हमें हक़ पर काइम रखे। हमने जो लिखा उसे कुबूल फ़रमाये। जो ग़लतियाँ हुई हों और जो खामियां रह गयीं उन्हें अपने हबीब ﷺ के सदके में मुआफ़ फ़रमाये।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हिंदी जुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :

बहारे तहरीर (अब तक 13 हिस्सों में)
अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?
अजाने बिलाल और सूरज का निकलना
इश्के मजाजी - मुंतखब मजामीन का मजमुआ
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!
शबे मेराज गौसे पाक
शबे मेराज नालैन अर्श पर
हज़रते उवैस करनी का एक वाकिया
डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत
ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल
चंद वाकियाते कर्बला का तहकीकी जाइज़ा
बिंते हव्वा
सेक्स नॉलेज
हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाकिये पर तहकीक़
औरत का जनाज़ा
एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की जुबानी
40 अहादीसे शफा'अत
हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से

मुहर्रम में निकाह

क्रियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?

ज़न और यकीन

ज़मीन साकिन है

शिरक क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही

इस्लामी तअलीम (हिस्सा अव्वल)

इस्लामी तअलीम (दूसरा हिस्सा)



ABOUT US

Abde Mustafa Official Is A Team
From Ahle Sunnat Wa Jama'at
Working Since 2014 On The Aim To Propagate
Quraan And Sunnah
Through Electronic And Print Media.



We are :

Writing articles, composing & publishing books, running a special **matrimonial service** for Ahle Sunnat

Visit our official website :

www.abdemustafa.in



about thousand of articles & 150+ tehqeeqi pamphlets
& books are available in Urdu, Roman Urdu & Hindi

E Nikah Matrimony

www.enikah.in

If you are searching a Sunni Life Partner then visit and find.
there is also a channel on Telegram
t.me/Enikah (Search "E Nikah Service" on Telegram)

Find & Follow us on Social Media Network :



Subscribe us on YouTube | [abdemustafaofficial](https://www.youtube.com/abdemustafaofficial)
Facebook & Instagram | [abdemustafaofficial](https://www.facebook.com/abdemustafaofficial)
Telegram Channel | t.me/abdemustafaofficial
Books Library on Telegram | t.me/abdemustafalibrary
or search "Abde Mustafa Official" on Google
for more details WhatsApp on **+919102520764**